International Journal of Humanitiesandsocialscience Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 18-05-2024, Accepted: 06-06-2024, Published: 29-06-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 38-39

भरतपुर महाराजा सूरजमलः एक व्यक्तित्व

अचलाराम
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, गिड़ा, बालोतरा, राजस्थान, भारत

सारांश
राजस्थान के ऐतिहासिक भरतपुर जिले का अतित अनगिनत संघर्षो तथा साहस और पराक्रम की गाथाओं से परिपूर्ण रहा है। भारतपुर को भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में महाराजा सूरजमल का विशेष योगदान रहा है। महाराजा सूरजमल भरतपुर राज्य के दूरदर्शी जाट महाराजा थे। भारत में महाराजा सूरजमल का नाम बड़ी श्रद्धा एवं गौरव से लिया जाता है। वे कुशल प्रशासक, दूरदर्शी व कूटनितिज्ञ थे। उन्होने युवा अवस्था में ही युद्धफतह कर अपनी पहचान बनाई। महाराजा सूरजमल ने अपने जीवन में जितने भी युद्ध लड़े उन में कभी कोई युद्ध नहीं हारां मुगलों के आकमण का प्रतिकार करने में उतरभारत में जिन राजाओं प्रमूख भूमिका रही है। उन में महाराजा सूरजमल का नाम बड़ी श्रद्धा एवं गौरव से लिया जाता है। महाराजा सूरजमल की महान और अदित्य उपलब्धि यह थी कि उन्होने भारतीय इतिहास की सबसे अस्थिर और डावाडोल शताब्दी में परस्पर लड़ने वाले जाट गुटों को मिलाकर एक किया।

मूल शब्दः डीग, पानीपत, युद्ध, अफलातून, प्रशासक, ऐतिहासिक

महाराज सूरजमल का जन्म 13 फरवरी 1707 ई. को हुआ था वे रावबदनसिंह के पुत्र थे। उन्हे पिता की ओर से वैर की जागीर मिली थी। उन्होने 1733 में खेमकरण सोगरिया की फतेहगढी पर हमला कर विजय प्राप्त कीं इसके बाद उन्होने 1743 में उसी स्थान पर भरतपुर नगर की निव रखी तथा 1753 में वहां आकर रहने लगे। राव बदनसिंह ने डीग को सबसे पहले अपनी राजधानी बनाया था। राव बदनसिंह के शासनकाल में कुम्हेर, डीग, व भरतपुर के दुर्गो का निर्माण और वैर व दिल्ली के आसपास ऐतिहासिक मंदिरों, और भवनों का निर्माण कराया गया। राव बदनसिंह की मृत्यु 1756 में हुई परन्तु उन्होने 25 वर्ष पहले ही सूरजमल को राज्यभार सौप दिया था। हालांकि बदनसिंह की मृत्यु 1756 में हुई परन्तु उन्होने अपने बेटे सूरजमल को शासन सम्भालने का आदेश पूर्व में ही दे दिया था। 7 जून 1756 को सूरजमल डीग के औपचारिक महाराजा बने। महाराज सूरजमल ने 1740 से 1763 तक शासन किया। हमाम–सादाद के लेखक ने महाराजा सूरजमल के विषय में लिखा है कि राजस्व और सिविल मामलों के संचालन और प्रबंधन में उनकी निपूर्णता व योग्यता तथा बुद्धिमानी की समानता सिवाय निजाम आसफजाह बहादुर के कोई भी भारतीय प्रतापी व्यक्ति नहीं कर सकता। साहस, शक्ति, समझदारी, अदम्य, चेतना, कूटनिति में उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता।

महाराज सूरजमल तथा सवाईजयसिंह के मध्य सम्बंध

भरतपुर को राजपूतना ही नही वरन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में महाराजा सूरजमल का विशेष योगदान है। उनकी दूरदर्षिता और कुशल नेतृत्व के कारण 1732 में हुऐ अश्वमेद्य यज्ञ में आमेर नरेश महाराजा सवाईजयसिंह ने सूरजमल को विशेष समान दिया। उनकी वीरता से प्रभावित होकर बूंदी के राजकवि सूर्यमल ने महाराजा सूरजमल को सूर्य की संज्ञा दी थी। महाराजा सूरजमल ने जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह से भी दोस्ती बना ली थी। 1743 को जयसिंह की मौत हो गई और उसके तुरन्त बाद उसके बेटो ईश्वरीसिंह और माधोसिंह में राजगद्धी को लेकर झगड़ा हुआं महाराजा सूरजमल बड़े बेटे ईश्वरीसिंह के पक्ष में थे जबकी उदयपुर के महाराणा जगतसिंह माधोसिंह के पक्ष में थे। बाद में जहाजपुर में दोनों भाइयों में युद्ध हुआ और मार्च 1747 में ईश्वरीसिंह के जीत हुई। 1 वर्ष बाद मई 1748 में पेशवाओं ने ईश्वरीसिंह पर दबाव डाला की वह माधोसिंह को 4 प्रगरना सौप दे। फिर मराठा, सिसोदिया, राठौड़ वगैरा 7 राजाओं की फोजे माधोसिंह के साथ हो गई और ईश्वरसिंह अकेला पड़ गया। महाराजा सूरजमल 10 हजार सैनिको के साथ ईश्वरसिंह की मदद के लिए जयपुर पहुचे और अगस्त 1748 में सातो फोजों को हरा दिया। इसी के साथ सूरजमल की तूती पूरे भारत में बोलने लगी थी।

महाराजा सूरजमल और पानीपत की तीसरी लड़ाई

महाराजा सूरजमल ने मराठा सेनाओं के अनेक अभियानों में बढचढ कर भाग लिया मगर किसी कारण से सूरजमल और मराठा सेनापति सदाशिव राव भाउ के मध्य मतभेत हो गये। इससे नराज होकर सूरजमल वापस भरतपुर चले गये। पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठा शक्तियो का संघर्ष अहमदशाह अबदाली से हुआं दिल्ली से लगभग 90 कि.मी.उतर में लड़ी इस लड़ाई में अफगानों में जीत हासिल की तथा इस लड़ाई में मराठा सेना के एक लाख सैनिको में से आधो सैनिक मारे गयें मराठा सेना के पास न तो पूरा राशन था और न ही इस क्षैत्र की उन्हे विशेष जानकारी थी। यदि सदा शिवराव भाउ के महाराजा सूरजमल से मतभेद न होते तो इस युद्ध परिणाम भारत के लिए शुभ होतां लेकिन महाराजा सूरजमल ने फिर भी अपनी पुरानी मित्रता निभाई और उन्होने शेष बचे घायल सैनिको के लिए अन्न, वस्त्र, और चिकित्सा का प्रबंध किया। महारानी किशोरी ने जनता से अपील कर अन्न आदि एकत्रित किया। ठीक होने पर वापस जाते हुऐ हर सैनिक को रास्ते के लिए भी कुछ धन अन्नाज तथा वस्त्र दिये। उन दिनों उनके क्षैत्र में भरतपुर के अतिरिक्त आगरा, धोलपुर, मैनपुरी, हाथरस, अलीगढ, ईटावा, मेरठ, रोहतक, मेवात, रेवाड़ी, गुड़ गांव और मथुरा सम्मलित थे। महाराजा सूरजमल ने गाजियाबाद, रोहतक और झजर को जीता।

महाराजा सूरजमल की कलात्मक उपलब्धियां

लोहागढ किला राजस्थान के भरतपुर शहर में स्थित प्रसिद्ध किलो में से एक है। जिसे महाराजा सूरजमल ने 1732 में एक कृत्रिम, द्वीप पर बनवाया था। और इसे पूरा होने में 8 साल लगे थे। वह अपने राज्य में ऐसे अन्य किलो और महलों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। इस तरह के अभेद किले को बनाने के लिए बड़ी संख्या में जनशक्ति और महत्वपूर्ण मात्रा में धन की आवश्यकता थी। जैसा की किले का नाम ही कहता है – लोहागढ़ जिसका

अर्थ है लोहे का किला, लोहागढ किले को सबसे मजबूत किलो में से एक माना जाता है। क्योकि लार्डलेक के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना भरतपुर की घेराबंदी के दौरान कई हमलो के बावजूद इसे कब्जा नहीं कर सके थे।

डीग पैलेस भारत के राजस्थान राज्य के डीग जिले के भारतपुर शहर से 32 कि.मी. दूर डीग में स्थित एक महल है। इसे महाराजा सूरजमल ने 1730 में भरतपुर राज्य के शासको के लिए शानदार ग्रीष्मकालीन रिसोर्ट के रूप में बनावाया था।

निष्कर्ष

25 दिसम्बर 1763 को नवाब नजीबौदोला के साथ हुऐ युद्ध में गाजिया बाद और दिल्ली के मध्य हिडन नदी के तट पर महाराजा सूरजमल ने वीर गति पाईं उनके युद्धो और वीरता का वर्णन सूदन कवि ने सुजान चरित्र नामक रचना में किया है। बताते है। 1763 में उनकी मृत्यु के समय उनका राज्य विस्तार भरतपुर, अलवर, धोलपुर, आगरा, बुलन्द शहर, सहारनपुर, मथुरा, पलवल, गुड़गांव, रेवाड़ी तथा दिल्ली के आसपास का क्षेत्र था। सूरजमल ने डाहल के सरदार की बेटी किशोरीदेवी से शादी की थी। अपने पति की मृत्यु के बाद भी रानी किशोरी ने भरतपुर के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया। महाराजा सूरजमल की मृत्यु के बाद उनके पुत्र जहवारसिंह,भरतपुर के महाराजा बनें

सन्दर्भ ग्रथ

1. जदूनाथ सरकार 1950, मुगल साम्राज्य का पतन, खण्ड 2 पृष्ठ सं. 43
2. नंद कुमार सनीश 2020, मराठा साम्राज्य का पतन।
3. आर.सी. मजूमदार, एच.सी. राय चौधरी, कालीकरंजन दता भारत का उन्नत इतिहास,चौथा संस्करण 1978 पृष्ठ संख्या 535
4. कानूनगो कालिक रजन (1925) जाटों का इतिहास
5. आधुनिक भारत के इतिहास में उन्नत अध्ययन 1707–1813, जे.एल. महेता पृष्ठ सं.
6. 606 गुप्ता, हरीराम 1961 मराठा और पानीपत।